→ पाठ-4

"रस"

रस का शब्दिक अर्थ - आंनद होता है अर्थात साहित्यिक आनंद को रस कहते हैं।

'काव्य को पढ़ते या सुनते समय जिस आंनद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।'

आचार्य विश्वनाथ ने कहा है - 'वाक्यं रसात्मक काव्यं' अर्थात सरस अभिव्यक्ति ही काव्य है।

रस का सूत्र :-

आचार्य भरतमुनि ने अपनी रचना नाट्यशास्त्र में रस की परिभाषा देते हुए कहा-

"विभावनुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पति:"

अर्थात विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव से रस की निष्पति होती है।

आचार्य भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या आठ होती है।

"रस के अंग"

→ रस के चार अंग होते हैं-

i) विभाव
ii) अनुभाव
iii) संचारी भाव

iv) स्थायी भाव

(i) विभाव :- कहानी या कविता के पात्र, घटनाएँ, स्थितियाँ वे विभाव हैं, जिन्हें देखकर पाठक के हृदय के भाव जागृत होते हैं। स्थायी भाव जागृत करने के कारक (कारण) या सामग्री या साधन) के विभाव कहते हैं।

* विभाव के भेद :- विभाव के दो भेद होते हैं-

1- आलंबन विभाव
2- उद्दीपन विभाव

1.- आलंबन विभाव :- पर्दे पर प्रकट मूल विषय वस्तु को आलंबन विभाव कहते हैं। आलंबन विभाव के दो भेद होते हैं-

- विषयालंबन
- आश्रयालंबन

- विषयालंबन → विषयालंबन वह है जिसे देखकर भाव जागृत हो।
- आश्रयालंबन → आश्रयालंबन वह है जिसके हृदय में यह भाव जागृत होता है।

2.- उद्दीपन विभाव :- आलंबन विभाव को पूर्ण परिपक्व अवस्था तक पहुँचाने के लिए कुछ स्थितियाँ सहायक के रूप में हमारे सामने आती हैं, उन्हें ही उद्दीपन विभाव कहती हैं।
जैसे- स्कात स्थान, वन-उपवन, मनोरम स्थल।

ii) अनुभाव :- आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। इससे यह सूचना मिलती है आश्रय के हृदय में विशेष अनुभूति क्रिया-शील हो उठी है।
जैसे - लजाना, मुस्कुराना, आँखे झपकाना आदि।

iii) संचारी / व्यभिचारी भाव :- संचारी भाव प्रत्येक मनुष्य के उठने-गिरने वाले मनोभाव हैं। ये स्थायी न होकर क्षणिक होते हैं। संचारी अर्थात् एक साथ संचरण करने वाला और व्यभि-चारी अर्थात् एक से अधिक के साथ रमण करने वाला होता है। ये किसी न किसी स्थायी भाव के संगी बनकर उनके साथ विचरण करते हैं। इनकी संख्या 33 होती है।

iv) स्थायी भाव :- प्रत्येक मनुष्य के चित्र में स्थायीभाव वासना रूप स्थिति होते हैं। ये हमेशा सुषुप्त अवस्था में विद्यमान रहते हैं। जब इनके सम्मुख इस की सामग्री प्रकट होती है तो ये क्रियाशील हो उठते हैं।

→

* रस के भाव और स्थायी भाव *

⇒ रस के 11 भेद होते है और प्रत्येक रस का अलग स्थायी भाव है जो निम्नलिखित हैं -

#	रस	स्थायी भाव
1.-	शृंगार रस	रति
2.-	वीर रस	उत्साह
3.-	करुण रस	शोक
4.-	रौद्र रस	क्रोध
5.-	हास्य रस	हास्य
6.-	अद्भुत रस	विस्मय
7.-	शांत रस	वैराग्य
8.-	वीभत्स रस	जुगुप्सा (घृणा)
9.-	भयानक रस	भय
10.-	वात्सल्य रस	संतति रति / बालरति
11.-	भक्ति रस	भगवद् रति

1.- शृंगार रस -

जहाँ पर अनुभाव, विभाव तथा संचारी भाव के संयोग से रति नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ शृंगार रस होता है। इसे रसों का राजा या रसराज कहा जाता है। इसके दो भेद होते हैं -

i.- संयोग शृंगार - जहाँ पर नायक एवं नायिका के मिलन की अनुभूति होती है, वहाँ पर संयोग शृंगार होता है।

जैसे - एक जंगल है तेरी आँखो में
मैं जहाँ राह भूल जाता हूँ।
मैं किसी रेल सी गुजरती हूँ
मैं किसी पुल सा थरथराता हूँ।

ii.) वियोग शृंगार - जब नायक एवं नायिका के बिछड़ने (अलग होने) की अनुभूति होती है, तो वहाँ वियोग शृंगार होता है।

जैसे :- मुझे फूल मत मारो
मैं अबला - बाला वियोगिनी
कुछ तो दया विचारो।

2.- वीर रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से उत्साह नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ वीर रस होता है।

जैसे - वीर तुम बढ़े चलो,
सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो,
तुम कभी रुको नहीं,
तुम कभी झुको नहीं।

3.- करुण रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से शोक नामक स्थायी भावों की उत्पत्ति होती है, वहा करुण रस होता है।

जैसे- दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो कहीं नहीं।

4.- हास्य रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से हास्य नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहा पर हास्य रस होता है।

जैसे:- अन्न परायो पाइके,
खायो पेट अघाइ। (अघाइ)
देह मिलय फिर-फिर महाँ,
अन्न परायो नाइ।

5.- रौद्र रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से क्रोध नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ पर रौद्र रस होता है।

जैसे :- उस काल मारे क्रोध के,
तन काँपने उसका लगा।
मानो हवा के जोर से,
सोता हुआ सागर जगा।

6.- अद्भुत रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से विस्मय नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ पर अद्भुत रस होता है।

जैसे:- केशव ~~नकही~~ जाइ का कहिए,
देखत तव रचना विचित्र;
अति समुझ मनहि मन रहिए।

→

7.- शांत रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से वैराग्य नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, तो वहाँ पर शांत रस होता है।

जैसे, जब मैं था तब हरि नहीं,
अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अधियारा मिट गया,
जब दीपक देखा माहि।

8.- वीभत्स रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा ~~भय~~ संचारी भाव के संयोग से घृणा नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ पर वीभत्स रस होता है।

जैसे:- फाड़ि नखन शव आँतड़िन,
रुधिर, स्वाद निकारि।
लेपति अपने मुखन पै,
हरसि प्रेतगन नारि।

9.- भयानक रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से भय नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ पर भयानक रस होता है।

जैसे:- उधर गरजी सिंधु लहरियाँ
कुटिल काल के जालों-सी
चली आ रही फेन उगलती
फन फैलाये व्यालों-सी।

→

10.- वात्सल्य रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से संतति रति या बाल रति नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, वहाँ पर वात्सल्य रस होता है।

जैसे :- तुझे विदा कर एकाकी
अपमानित सा रहता हूँ बेटा,
दो आँसू आ गए
समझता हूँ उनसे बहता हूँ बेटा।

11.- भक्ति रस :- जहाँ पर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से भगवद् नामक स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, तो वहाँ भक्ति रस होता है।

जैसे :- हमारे हरि हारिल की लकरी।

—x—x—x—